विद्या भारती तथा कॉन्वेंट विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 सारा बासु* और कनक पान्डे**

सारांश

मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्य व्यक्ति के लिए महत्त्व रखते हैं और इन मूल्यों का एक सामाजिक–सांसतिक आधार या पृष्ठिभूमि होती है । एक शिक्षक का फर्ज बनता है कि वह पाठ्य–पुस्तकों में दिए गए 'मूल्यों' का महत्त्व समझे, उन्हें अपने जीवन व्यवहार का हिस्सा बनाए, फिर बच्चों के दैनिक व्यवहार में लाने का प्रयास करे। यह आवश्यक है कि शिक्षकों मे आदर्श मूल्यों का विकास हो क्योंकि जब शिक्षक मूल्यों के महत्व को जानेगें तभी वह अपने छात्रों मे भी मूल्यों का विकास कर पायेगें। प्रस्तुत अध्ययन में विद्या भारती व कान्वेंट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन विवरणात्मक सर्वे विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध मे उददेश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन किया गया है। इसमे चार विद्या भारती एंव तीन कॉन्वेंट विद्यालयो के शिक्षको को लिया गया है। विद्या भारती विद्यालय से 42 शिक्षकों का चयन किया गया है तथा कॉन्वेंट विद्यालयो मे 27 शिक्षकों का चयन किया गया है। इसमे 37 पुरुष एंव 32 स्त्री शिक्षक है। शोध में एस पी आहलुवालिया तथा हरवंश सिंह द्वारा निर्मित ''टीचर वैल्यू इन्वैन्टरी'' टेस्ट का प्रयोग किया गया है। निश्कर्शो को प्राप्त करने के लिए 'मध्यमान', 'मानक विचलन' तथा 'टी–परीक्षण' का प्रयोग किया गया है । प्राप्त आंकड़ो के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तावना

किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है क्योंकि इन्हीं के आधार पर अच्छा–बुरा या सही–गलत की परख की जाती है। इंसान के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका अपना परिवार ही होता है और परिवार समाज का एक अंग है। उसके बाद उसका विद्यालय, जहां से उसे शिक्षा हासिल होती है। परिवार, समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है। प्राचीन काल के भारत में पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा भी जरूरी होती थी। लेकिन वक्त के साथ यह कम होता चला गया और आज वैश्वीकरण के इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा की भागीदारी लगातार घटती जा रही है।

एक शिक्षक का फर्ज बनता है कि वह पाठ्य–पुस्तकों में दिए गए 'मूल्यों' का महत्त्व समझे, उन्हें अपने जीवन व्यवहार का हिस्सा बनाए, फिर बच्चों के दैनिक व्यवहार में लाने का प्रयास करे। विद्यालयों से समाज की अपेक्षा होती है कि वह तर्कशील मनुष्य प्रदान करे। इसलिए स्कूलों में ही जरूरी मानव मूल्यों की शिक्षा नहीं दी गई तो कहीं न कहीं राष्ट्र के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाने से हम चूक जाएंगे। लिहाजा, आवश्यक है कि पाठ्य–पुस्तकों में उल्लिखित मूल्यों के प्रति शिक्षक समाज चिंतनशील हो, उन्हें बच्चों के दैनिक जीवन में लेकर आए।

मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। वे मूल्य व्यक्ति के लिए महत्त्व रखते हैं और उन्हें व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक समझते हैं। इन मूल्यों का एक सामाजिक–सांसतिक आधार या पृष्ठिभूमि होती है, इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता मिलती है।

शिक्षा विकास की एक प्रकिया है जो प्राचीन काल से निमल धारा की तरह समाज एंव व्यक्ति के विकास हेतु प्रवाहवान है। यह शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का चतुर्दिक विकास होता है। यह शिक्षा ही है, जो व्यक्ति के जीवन को अलौकिक करती हुई उसे स्वस्थ्य

*प्रवक्ता, शिक्षक शिक्षा विभाग, बरेली कॉलेज बरेली (उत्तर प्रदेश)
**एम. एड. छात्रा, शिक्षक शिक्षा विभाग, बरेली कॉलेज बरेली (उत्तर प्रदेश)

आचरण के लिए तैयार करती है। मूल्यों के विकास में परिवार , समुदाय एंव शिक्षक आदि का योगदान होता है। छात्र अपने जीवन में यदि किसी से प्रेरित होते है तो वह उनके शिक्षक हैं। अतः शिक्षकों का व्यक्तित्व उच्च कोटि का होना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों मे आदर्श मूल्यों का विकास हो क्योंकि जब शिक्षक मूल्यों के महत्व को जानेगें तभी वह अपने छात्रों मे भी मूल्यों का विकास कर पायेगें। इसी कारण यह आवश्यक हो जाता है की शिक्षक अपने जीवन में उत्तम मूल्यों का आवरण करें। इस अध्ययन में विद्या भारती व कान्वेंट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों की तुलना की गयी है ।

समस्या कथन

''विद्या भारती तथा कॉन्वेंट विद्यालय मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन ''

अध्ययन का उददेश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन ।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती एंव कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत पुरुश शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
4. माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती एंव कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती एंव कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत पुरुश शिक्षकों के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है।
3. माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती एंव कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन मे सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत शोध मे उददेश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन किया गया है। इसमे चार विद्या भारती एंव तीन कॉन्वेंट विद्यालयो के शिक्षको को लिया गया है। विद्या भारती विद्यालय से 42 शिक्षकों का चयन किया गया है तथा कॉन्वेंट विद्यालयो मे 27 शिक्षकों का चयन किया गया है। इसमे 37 पुरुश एंव 32 स्त्री शिक्षक है।

उपकरण

विद्या भारती तथा कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये एस पी आहलुवालिया तथा हरवंश सिंह द्वारा निर्मित ''टीचर वैल्यू इन्वैन्टरी'' टेस्ट का प्रयोग किया गया है। इस मापनी मे कुल 25 कथन है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध के निश्कर्शो को प्राप्त करने के लिए तालिकाओं से प्राप्त आंकड़ो का विश्लेशण किया गया हैं। इसके लिए 'मध्यमान', 'मानक विचलन' तथा 'टी–परीक्षण' का प्रयोग किया गया है ।

आंकड़ों का विश्लेशण

तालिका नं –1 माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्य

क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
सैद्धान्तिक मूल्य	88.70	11.39
आर्थिक मूल्य	89.91	9.27
सौन्दर्यात्मक मूल्य	90.59	10.49
सामाजिक मूल्य	81.16	9.04
राजनीतिक मूल्य	86.96	10.52
धार्मिक मूल्य	86.74	11.14

तालिका न0 1 से प्राप्त आकड़ों से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों में सौन्दर्यात्मक मूल्यए आर्थिक मूल्य तथा सैद्धान्तिक मूल्य को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है । इनकी अपेक्षा बाकी मूल्यों को अर्थात धार्मिक मूल्यए राजनीतिक मूल्य तथा सामाजिक मूल्य को शिक्षकों द्वारा कम महत्त्व दिया गया है।

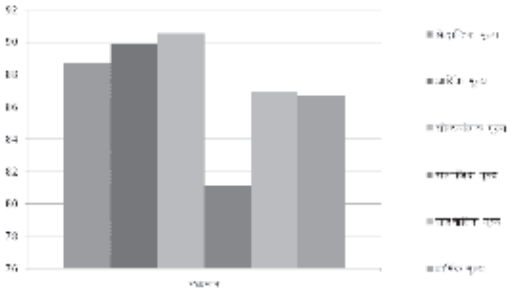

तालिका नं –2 माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्य

क्षेत्र	विद्याभारती 42		कॉन्वेंट 27		टी मान	सार्थकता
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
सैद्धान्तिक मूल्य	87.81	11.92	90.07	10.59	0.82	सार्थक नहीं है
आर्थिक मूल्य	89.76	8.20	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सार्थक नहीं है
सौन्दर्यात्मक मूल्य	89.46	8.82	92.59	[illegible]	[illegible]	सार्थक नहीं है
सामाजिक मूल्य	81.91	8.71	80	9.96	0.82	सार्थक नहीं है
राजनीतिक मूल्य	88.12	9.92	85.15	11.35	1.13	सार्थक नहीं है
धार्मिक मूल्य	86.43	10.02	87.22	12.98	0.27	सार्थक नहीं है

तालिका संख्या 2 से स्पश्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नही है। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है'' स्वीकृत की जाती है।

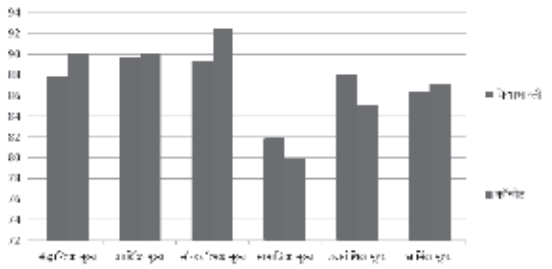

तालिका नं –3 माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों में कार्यरत पुरुश शिक्षकों के मूल्य

क्षेत्र	विद्याभारती 22		कॉन्वेंट 15		टी–मान	सार्थकता
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
सैद्धान्तिक मूल्य	91.05	10.11	92.57	10.77	0.46	सार्थक नहीं है
आर्थिक मूल्य	87.62	9.75	91	9.53	1.04	सार्थक नहीं है
सौन्दर्यात्मक मूल्य	82.36	10.59	95.53	9.64	3.65	0.01
सामाजिक मूल्य	84.41	10.91	78.73	9.46	1.76	सार्थक नहीं है
राजनीतिक मूल्य	87.65	8.72	82.13	9.97	2.03	सार्थक नहीं है
धार्मिक मूल्य	88.04	8.91	83.53	9.08	1.56	सार्थक नहीं है

तालिका संख्या 3 से स्पश्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है । केवल सौन्दर्यात्मक मूल्य में विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया है । अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती एंव कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत पुरुश शिक्षकों के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है'' आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

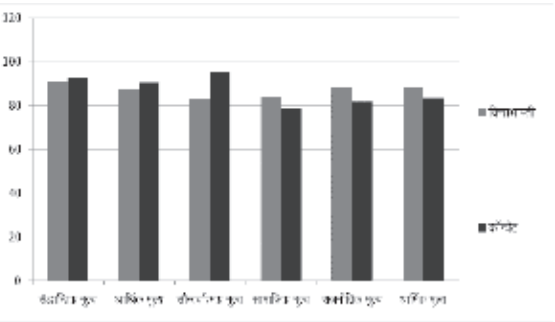

तालिका नं–4 माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्य

क्षेत्र	विद्याभारती 20		कॉन्वेंट 12		टी–मान	सार्थकता
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
सैद्धान्तिक मूल्य	84.25	12.53	85.83	9.32	0.34	सार्थक नहीं है
आर्थिक मूल्य	92.06	8.20	89.08	15.17	0.56	सार्थक नहीं है
सौन्दर्यात्मक मूल्य	93.95	6.95	85.75	8.65	2.41	0.05
सामाजिक मूल्य	79.15	9.55	81.58	7.19	0.91	सार्थक नहीं है
राजनीतिक मूल्य	87.90	11.29	84.75	13.31	0.39	सार्थक नहीं है
धार्मिक मूल्य	84	10.21	90.83	15.59	1.46	सार्थक नहीं है

तालिका संख्या 4 से स्पश्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है । केवल सौन्दर्यात्मक मूल्य में विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया है । अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती एंव कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षिकाओं के मूल्यों मे सार्थक अन्तर नही है'' आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

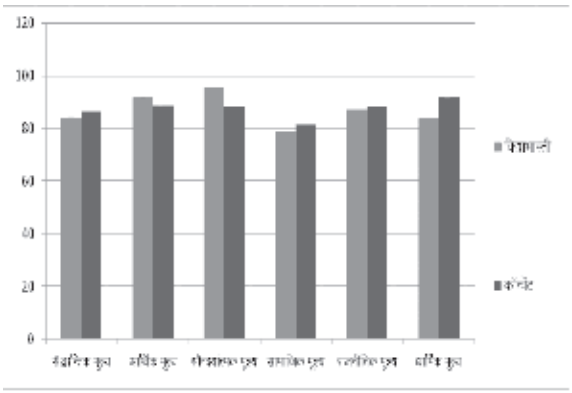

निष्कर्ष

प्राप्त आंकड़ो के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि माध्यमिक स्तर पर विद्याभारती और कॉन्वेंट विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मूल्यों के रुझान में कोई सार्थक अंतर नहीं है । इन परिणामो के पीछे संभवतः यह कारण हो सकता है के आजकल शिक्षक किसी विचार धारा के फलस्वरूप नौकरी न करके अपनी सुविधा व परिस्थितियों के अनुसार कार्यस्थल का चयन करते हैं । अतः इन शिक्षकों के अपने मूल्यों का उनके कार्यस्थल से कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।